P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-VIII April-2015
E: ISSN NO.: 2349-980X

श्रीमती सरोजिनी नायडू एवं राष्ट्रीय आन्दोलन में योगदान

संजू
वरिष्ठ प्रवक्ता,
इतिहास विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, अकबरपुर
कानपुर देहात

सारांश

श्रीमती सरोजनी नायडू एक अद्भुत व्यक्तित्व की धनी थी। वह महिलाओं के लिये एक प्रेरणास्रोत थी। जब भारत गुलामी की दास्ता झेल रहा था तब नायडू ने अपनी कविताओं और बहुमुखी प्रतिभा के बल पर भारतीयों में एक नई राष्ट्रीय भावना का संचार किया वह एक सशक्त महिला थी। उन्होंने गांधी के सभी राजनीति कार्यो में सक्रिय भागीदारी निभाई थी। गांधी जी के नमक तोड़ो कानून और रचनात्मक कार्यक्रम को राष्ट्रव्यापी बनाने का कार्य किया।

मुख्य शब्द : आन्दोलन, महिला सशक्तिकरण, राष्ट्र, राष्ट्रवाद, रचनात्मक कार्य

प्रस्तावना

बाल्यकाल और शिक्षा

सरोजिनी का जन्म 13 फरवरी 1879 को हैदराबाद में हुआ था। वे अपने माता–पिता के आठ बच्चों में सबसे बडो थी। उनके पिता अघोरनाथ चट्टोपाध्याय और माता वरदा सुरंदरी थीं। सरोजिनी के अनेक पूवर्ज विद्यानुरागी थे। सरोजिनी देवी ने अपने पिता के जीवन को भव्य असफलता कहा है। तथापि अघोरनाथ के जीवन की उपलब्धियां छोटी–मोटी नहीं थी। उनका संस्कृत पर अधिकार था। वे पूर्व और पश्चिम साहित्य व संस्कृति से परिचित थे। वे अंगजी, हिब्रू, फ्रेंच, जर्मन और रूसी भाषाए जानते थे। उनके जीवन का उद्देश्य नित्यप्रति कुछ नया सीखना था। वे कलकत्ता में ब्रह्मसमाज के यशस्वी नेता केशवचन्द्र सेन के सम्पक में रहे थे। उनकी पत्नी भी केशवचन्द्र सेन की शिष्य थीं।

अघोरनाथ रसायनशास्त्र के विद्वान थे। उन्होने 1877 में एडिनबर्ग विश्वविद्यालय से रसायन शास्त्र में डाक्टर आफ साइस की उपाधि प्राप्त की थी। 1878 में स्वदेश वापस आने पर अघोरनाथ ने हैदराबाद में कई शिक्षा संस्थाओं की स्थापना में योगदान दिया। इन शिक्षा संस्थाओं में हैदराबाद कालेज प्रमुख था। बाद में यह कालेज निजाम कालेज के नाम से विख्यात हुआ। अघोरनाथ इस कालेज के प्रिसिंपल नियुक्त किए गये। अघोरनाथ जाति–प्रथा और बाल विवाह के विरोधी थे। उन्होन हैदराबाद में स्त्री–शिक्षा के प्रसार में रूचि ली। 1885 में इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना हुई थी। अघोरनाथ ने उसके कार्यकलापों में प्रारम्भ से ही सक्रिय रूचि ली। सरोजिनी देवी के छोटे भाई कवि और अभिनेता हरिन्द्र नाथ चट्टोपाध्याय ने अपने घर के वातावरण का वर्णन करते हुए लिखा है ''ज्ञान और संस्कृति का संग्रहालय, मिले जुले अद्भुत लोगों से भरा हुआ चिडियाघर जिनमें से कुछ रहस्यवाद की ओर थी झुके थे – क्योंकि हमारा घर सबके लिए समान रूप से खुला हुआ था।''

सरोजिनी के घर में प्रचुर अतिथि–सत्कार होता था। सरोजिनी के माता–पिता परस्पर बंगाली बोलते थे। उनकी माता वरदासुन्दरी को अनेक भाषाओं का ज्ञान था। उनके भाई वीरेन्द्रनाथ बहुभाषाविद् थे, शुरू में सरोजिनी की अंग्रेजी पढने की ओर रूचि नहीं थी। वे अंग्रेजी भाषा के अध्ययन के प्रति अपने पिता की प्रेरणा से उन्मख हुई। सरोजिनी के पिता उन्हें गणितज्ञ बनाना चाहते थे। लेकिन सरोजिनी भावुक और कल्पनाशील थी। जब वे ग्यारह वर्ष की थी और बीज गणित के एक सवाल से जूझ रही थीं तभी उन्हें एक कविता सुझ गई। यह कविता उन्होनें लिपिबद्ध कर ली। यहीं से उनका कवि जीवन आरम्भ हो गया। तेरह वर्ष की अवस्था में उन्होंने एक लम्बी कविता लिखी–''ए लेडी आफ द लेक''। इस कविता में तेरह सौ पंक्तियां थी। पूरी कविता छह दिनों में लिखी गई थी। इसी साल उन्होनें 2000 पंक्तियों का एक नाटक लिखा था यह नाटक उन्होंने क्षणोन्माद में ही लिखना आरम्भ कर दिया था। पिता अघोरनाथ ने पुत्री की अप्रतिम प्रतिभा को शुरू से हो पहचान लिया था हैदराबाद में लड़कियों के लिए उपर्युक्त शिक्षा की व्यवस्था नहीं थी। इसलिए अघोरनाथ ने अपनी

लाडली बेटी को पढ़ने के लिये मद्रास भेज दिया। सरोजनी ने 1891 में बारह वर्ष की आयु में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। वे समूचे प्रांत में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान पर उत्तीर्ण हुई थी।

1892 से 1895 तक सरोजिनी अपने घर पर ही रहीं। इस बीच उन्होंने अनेक कविताएं लिखीं जिन्हें उनके पिता ने 1896 में पुस्तक रूप में प्रकाशित किया। 1894 में सरोजिनी का डा0 गोविन्द राजलू नायडू से प्रेम हो गया। इस समय सरोजिनी की आयु सिर्फ 16 वर्ष थी। डा0 नायडू विधुर थे और आयु में उनसे दस वर्ष बडे थे। पिता अघोरनाथ इस विवाह के विरूद्ध थे। पिता ने सरोजिनी को उच्च अध्ययन के लिए इंलैण्ड भेज दिया। इंग्लड म उन्होंने दो वर्ष कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में अध्ययन किया था लेकिन वे वहॉ से बिना कोई उपाधि लिए ही भारत वापस आई। दो वर्ष के इंग्लैड प्रवास में सरोजिनी का वहां की साहित्यिक मंडली से परिचय हुआ। एडमंड गास और आर्थर साइमन्स ने सरोजिनी की काव्य प्रतिभा की प्रशंसा की और उन्हें भारतीय विषयों पर काव्य रचना की प्रेरणा दी।

सितम्बर 1898 में सरोजिनी इंग्लैड से स्वदश वापस आ गई। यहां आकर उन्होने सबसे पहला काम यह किया कि वे डा0 गोविन्द नायडू के साथ विवाह बंधन में बंध गई। यह अंतर्प्रातीय और अंतर्जातीय विवाह था। यह विवाह 2 सितम्बर, 1898 को मद्रास में विशेष विवाह कानून के अन्तर्गत सम्पन्न हुआ था। विवाह के बाद सरोजिनी एक तरूण रोमानी वधू के रूप में हैदराबाद में बस गई। 1901 में उनका पहला बच्चा जयसूर्य पैदा हुआ। इसके बाद उनके तीन बच्चे और हुए–पद्माजा, रणीधर और लीलामणि। सरोजिनी का परिवारिक जीवन हर तरह से सुखी था।

रचनाएं

1905 में सरोजिनी की पहली कविता–''पुस्तक द गोल्डन थ्रेशोल्ड'' लंदन से प्रकाशित हुई। यद्यपि सरोजिनी की अभिव्यक्ति का माध्यम अंग्रेजी भाषा थी, तथापि उनका शब्दावली पूर्णतः भारतीय थी। इस पुस्तक ने उन्हें अंग्रजी की प्रतिष्ठित कवयित्री बना दिया। इंग्लैड के अनेक समाचार–पत्रों लंदन टाइम्स, मैनचेस्टर, गार्जियन और आफ रिव्यूज ने सरोजिनी की काव्य प्रतिभा की सराहना की।

सरोजिनी नायडू का भारतीय राजनीति में प्रवेश

श्रीमती सरोजिनो नायडू की भारतीय राजनीति के शिखर पुरूष गोपाल कृष्ण गोखले से पहली भेंट 1902 में हुई थी। गोखले ने उनका ध्यान सामाजिक और राजनीतिक प्रश्ना की ओर खींचा था। गौखले की प्रेरणा से सरोजिनी ने देश के विभिन्न भागों का दौरा करने और सामाजिक–राजनीतिक महत्व के विषयों पर व्याख्यान देने का क्रम आरम्भ किया। सरोजिनी नायडू ने 1905 के स्वदेशी आन्दोलन में भाग लिया था। 1906 में उन्हाने कलकत्ता में भारतीय समाज सम्मेलन में भारतीय स्त्रियों की शिक्षा विषय पर भाषण दिया और महिला सशक्तिकरण पर बल दिया। महिलाओं के लिये षिक्षा अनिवार्य बताई इसी से राष्ट्र का विकास और राष्ट्रवाद की भावना को बल मिलेगा ऐसी उनकी महिलाओं के प्रति विचारधारा थी।

इस भाषण में उन्होंने अपने पुरूष भाइयों को भी याद दिलाया कि राष्ट्र की वास्तविक निर्माता महिलायें होती है, पुरूष नहीं। भारत की अधोगति का एक बडा कारण यह है कि भारत मे महिलाओं को शिक्षा से वंचित कर दिया। 1908 में सरोजिनी नायडू को उनकी सार्वजनिक सेवाओं के लिए ''कैसरे हिंद पदक'' प्राप्त हुआ। इसी साल उन्होंने मद्रास में भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन के अधिवेशन में भाग लिया। 1909 म उनकी एक अन्य महान महिला डा0 श्रीमती मुट्टू लक्ष्मी रेड्डी से मद्रास में मुलाकात हुई। 1912 में श्रीमती सरोजिनी का दूसरा काव्य संग्रह ''द बर्ड आफ टाइम'' लंदन से प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक का शीर्षक उन्होंने उमर खैयाम की एक कविता से ग्रहण किया था। सरोजिनी नायडू की इस पुस्तक का भी भावभीन स्वागत हुआ। इंग्लैंड के एक पत्र यार्कशायर पोस्ट ने बर्ड आफ टाइम के बारे में लिखा था। ''श्रीमती नायडू ने न केवल हमारी भाषा को समृद्ध किया है अपितु पूर्व के चमत्कार, रहस्यवाद भावनाओं और आत्मा के साथ निकट संपर्क बढाने में हमें समर्थ भी किया है।'' सरोजिनी नायडू की यह पुस्तक भी काफी बिकी और अब वे भारत में एक आदरणीय नेता मानी जाने लगी।

भारतीय राजनीति में गांधी युग और सरोजिनी नायडू की सक्रिय सहभागिता

06 अगस्त, 1914 को लंदन में सरोजिनी नायडू की महात्मा गांधी से पहली बार भेंट हई। इस समय सरोजिनी नायडू की आयु 35 वर्ष और महात्मा गांधी की 45 वर्ष थी। सरोजिनी नायडू ने गांधी जी से अपनी पहली भेंट का नाटकीय ढंग से वर्णन किया है – गांधी जी एक पुराने ढंग के मकान में ठहरे हुए थे। वे फर्श पर जेल के एक काले कम्बल पर बैठे हुए थे ओर लकडो के कटोरे में से मीड़े हुए टमाटर व जैतून के तेल का भोजन कर रहे थे। चारों ओर रखे थे भुनी हुई मुंगफली और सूखे केले क बेस्वाद बिस्कुटों के पिचके हुए डिब्बे। सरोजिनी नायडू जोर से हंस पडी। गांधी जी ने आंख ऊपर उठाई और वे भी सरोजिनो को देख कर हंस पडे तथा बोले, ''अरे तुम अवष्य ही श्रीमती नायडू हो। और दूसरा कौन इतना आदरविहीन हो सकता है? आओ, मेरे साथ खाना खाओं'' श्रीमती नायडू ने गांधी जी के साथ खाना नही खाया। गांधीजी और सरोजिनी नायडू की मित्रता इस प्रकार आरम्भ हुई। यह मित्रता 30 साल से अधिक लम्बे समय तक कायम रही।

1915 के आरम्भ में सरोजिनी नायडू को दो व्यक्तिगत आघात सहने पडे। जनवरी, 1915 में सरोजिनी के पिता अघोरनाथ तथा 19 फरवरी 1915 को उनके स्नेही मित्र गोपाल कृष्ण गोखले दिवंगत हुए। सरोजिनी नायडू ने गोपाल कष्ण गोखले को एक महान संत और राष्ट्रीय न्याय के सैनिक'' कहा था। सरोजिनी के अनुसार गोखले का जीवन ''एक धर्मकार्य था और उनकी मृत्य् भारतीय एकता के लिए बलिदान थी।''

पं0 जवाहर लाल नेहरू व सरोजिनी नायडू

1916 में लखनऊ कांग्रेस के अवसर पर सरोजिनी की पडित जवाहर लाल नेहरू से पहली बार भेंट हुई। उनकी तीन कविताएं भी ''आक्सफर्ड बुक आफ इंग्लिस मिस्टिकिल वर्स'' में सम्मिलित की गई। भारत की स्वतंत्रता से 5 महीने पहले जवाहर लाल नेहरू ने दिल्ली में एषियाई सम्बन्ध सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता श्रीमती सराजिनी नायडू ने की। उनका अध्यक्षीय भाषण उनके सर्वश्रेष्ठ भाषणों में से एक है।

लंदन में गांधीजी बीमार पड गए। डाक्टरों ने पूरी तरह आराम करने की सलाह दी। जब वे 1915 के आरम्भ में भारत लौटे, उनके राजनीतिक गुरू और प्रमुख उदारवादी नेता गोपाल कृष्ण गोखल ने उन्हें सलाह दी कि वे एक वर्ष तक सक्रिय राजनीति में भाग न लें और भारत की स्थिति का अध्ययन करें । गांधीजी ने ऐसा ही किया। 1916 में उन्होने कांग्रेस के सम्मेलन में भाग लिया और वे भारतीय राजनीति में खुलकर सामने आ गये। इस समय सरोजिनी नायडू भारतीय राजनीति में अच्छी तरह से प्रतिष्ठित थीं। 1915 में उन्हाने बम्बई में कांग्रेस के अधिवेशन में अपनी 'जागो' कविता सुनाकर तहलका मचा दिया था।1916 के बाद स्वतंत्रता आंदोलन एक निश्चित रूप लेने लगा। इसका श्रेय महात्मा गांधी को है। 1917 में गांधीजी ने बिहार के चंपारन जिले में नील की खेती करने वाले किसानों की समस्या सुलझायी। गांधीजी ने अहमदाबाद में मिले मालिकों और मजदूरों के बीच फैसला किया। उन्होंने खेड़ा के किसानों की लगान मुलतवी की मांग को सरकार से मनवा लिया। गांधीजी के कार्यकलाप केवल राजनीति आंदोलन तक की लगान तक सीमित नही थे। उनका अपना एक रचनात्मक कार्यक्रम भी था जिसके अंतर्गत गांव उद्धार अस्पृश्यता–उन्मूलन, खादी प्रचार, हिन्दु–मुस्लिम एकता तथा स्त्री–उत्थान जैसे विषय सम्मिलित थे। इस सारे कार्यक्रमों मे नायडू ने भी भाग लिया था। 1919 में रौलट एक्ट ने सारे देश में असतोष की ज्वाला पैदा कर दी थी। मार्च 1919 में गांधीजी ने अहमदाबाद में स्थित अपने साबरमती आश्रम में कुछ चुने हुए लोगों का सम्मेलन बुलाया। इस सम्मेलन ने सरोजिनी नायडू भी आमन्त्रित थीं। सम्मेलन में सत्याग्रह की प्रतिज्ञा का प्रारूप तैयार किया गया था। इस प्रतिज्ञा पत्र पर जिन व्यक्तियों के हस्ताक्षर किए थे, उनमें सरोजिनी नायडू भी थीं। इस सम्मेलन के बाद सरोजिनी नायडू ने देष के विभिन्न भागों में सत्याग्रह पर भाषण दिए। अपने एक भाषण में उन्होंने कहाः–

''सत्याग्रह आन्दोलन समुचित जीवन का सिद्धान्त हैं उसका विकास और प्रसार आवश्यक है। इस सिद्धान्त में जीवन की अमर क्रियाएं सन्निहित हैं। सत्याग्रह आंदोलन ने उस मंदिर या आश्रम में अपनी ज्वाला प्रज्जवलित की है जहां महात्मा गांधी प्रधान पुरोहित या गुरू हैं सच बोलना अच्छा है किन्तु सच जीना और अधिक अच्छा है।

6 अप्रैल 1919 रौलट एक्ट के विरोध में सारे देश में हड़ताल आयोजित की गई। इस हड़ताल में मुसलमानों और हिन्दुओं ने एकजूट होकर काम किया। बम्बई में हड़ताल विषेष रूप से सफल रही। महात्मा गांधी और सरोजनी नायडू को लोग एक मस्जिद में ले गये वहॉ दोनों ने भाषण दिए। गांधीजी पर सरकार ने रोक लगा दी कि वे दिल्ली और पंजाब नही जा सकते। गांधीजी ने सरकार की इस निषेधाज्ञा का विरोध किया और वे दिल्ली की ओर चल पडे। उन्हें रास्ते में ही गिरफ्तार कर लिया गया। उनकी गिरफ्तारी से सारे दश में गुस्से की लहर दौड़ गई। सरकार ने अपने दमन–चक्र की गति तेज कर दी। पंजाब के दो लोकप्रिय नेता थे डा. सैफुद्दीन किचलू और डा. सत्यपाल। जब सरकार ने उन्हें गिरफ्तार किया तब जनता ने विरोध प्रदर्शन के लिए जुलूस निकाला। पुलिस ने जुलूस पर अंधाधुंध गोलियां चलाई। 12 अप्रैल को नगर का शासन सेना को सौंप दिया गया।

13 अप्रैल, 1919 को अमृतसर के जलियावाला बाग में भयंकर हत्याकांड हुआ। जलियावाला बाग की त्रासदी का सारे देश पर प्रभाव पडा। रवीन्द्र नाथ टैगोंर ने 'सर' का खिताब सरकार को वापस कर दिया। वायसराय की कौंसिल के एक भारतीय सदस्य शंकरन नायर ने कौंसिल की सदस्यत से त्याग पत्र दे दिया। गांधीजी ने अपना ''कैसरे हिन्द'' स्वर्ण पदक सरकार को लौटा दिया, घटनाक्रम तेजी से आगे बढा। महात्मा गांधी ने सरकार के विरोध में असहयोग आंदोलन आरम्भ करने का निश्चय किया। कलकत्ता में कांग्रेस का विशेष अधिवेषन हुआ इस अधिवेशन ने गांधीजी का असहयोग आंदोलन का कार्यक्रम स्वीकार कर लिया। कुछ समय बाद नागपुर में कांग्रेस का नियमित अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन ने गांधीजी के असहयोग आंदोलन की पुष्टि कर दी। गांधीजी कांग्रेस के एकछत्र नेता बन गए। जो पुराने नेता उनसे असहमत थे। वे कांग्रेस से निकल गए। श्रीमती सरोजिनी नायडू ने गांधीजी का साथ दिया।

1917 सरोजिनी नायडू का तीसरा कव्य संग्रह द ब्रोकन विंग (टूटा पंख) प्रकाषित हुआ इसके साथ ही उसका काव्य–सृजन समाप्त हो गया। इसके बाद उन्होने तब तक कुछ सामयिक गीत अवश्य लिखे लेकिन व्यवहारतः वे राजनीति के पानी में गहरे उतरती गई। लोकमान्य तिलक ने 1919 में अखिल भारतीय होमरूल लीग की ओर से श्रीमती नायडू को इग्लैंड भेजा। इसी साल 19 नवम्बर को इंदिरा गांधी का जन्म हुआ। अस अवसर पर सरोजिनी नायडू ने जवाहरलाल नेहरू को भविष्यवाणी करते हुए लिखा था कि उनकी पुत्री भारत की एक नवीन आत्मा सिद्ध होगी।

कानपुर कॉग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता

नवम्बर 1925 में कॉग्रेस का अधिवेशन कानपुर में आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता श्रीमती सरोजनी नायडू ने की और बहुत से महत्वूपर्ण निर्णय इनके द्वारा लिये गये। सबसे प्रमुख बात यह कि उस समय महिला अध्यक्षता से स्त्रियों को बहुत मानसिक बल मिला और वह भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी के लिये तत्पर हुई।

उत्तर प्रदेश की प्रथम महिला गर्वनर

जब भारत स्वतंत्रता हुआ, सरोजिनी नायडू को उत्तर प्रदेश की प्रथम राज्यपाल बनाया गया। वह प्रथम महिला राज्यपाल थी। 30 जनवरी, 1984 को गांधीजी की

हत्या हो गयी। सरोजिनी आहत और टूटे दिल से दिल्ली आई। गांधीजी की मृत्यु पर उन्होने कहाः–

''ये सिसकियां किस लिए? क्या वे जीर्ण वृद्धावस्था या अजीर्ण से मरते? उनके लायक यही एक महान मृत्यु थी।

अपने रेडियो से प्रसारित भाषण में सरोजिनी ने कहा था–

''निजी शोक का समय बीत चुका है। छाती पीटने और बाल नोचने का समय नहीं रहा। अब समय है खड़े होने का और यह कहने का –जिन्होंने महात्मा गांधी का विरोध किया, उनकी चुनौती को हम स्वीकार करते है।''

12 जनवरी, 1948 को इलाहाबाद में संगम के तट पर महात्मा गांधी का अस्थि–विर्सजन किया गया। अपनी बीमारी के बावजूद सरोजिनी इस अवसर पर उपस्थित थी। इस अवसर पर उन्होंने कहा था–

''युगों से गंगा और यमुना लोक प्रसिद्ध नदियॉ रही है। जिन्होंने संगम के जल में अन्तिम मुक्ति चाहने वालो लाखों स्त्री–पुरूषों की भस्मी को अपने दिल में समा लिया हैं किन्तु भारत के इतिहास मे कभी भी गंगा यमुना ने ऐसे यशस्वी मानव की भस्मी को नहीं पाया जिनका जीवन ओर मृत्यु हमारी श्रृद्धा और अनुकरण हेतु एक अनश्वर उदाहरण है।''

मृत्यु

13 जनवरी, 1948 को श्रीमती सरोजिनी नायडू को आयु 70 वर्ष हो गई। उनका दिल कमजोर हो गया था। रक्तचाप की उन्हें शिकायत भी थी। गांधीजी की आकस्मिक मृत्यु ने उन्हें हिला दिया था। वे बीमार पड़ गई थी और 2 मार्च, 1948 के सबेरे 3.30 बजे उनके प्राण पखेरू उड गये। भारत की एक महान कवयित्री, देशभक्त और स्वतंत्रता–सेनानी का अंत हो गया। लखनऊ में गोमती नदी के तट पर उनका अन्तिम संस्कार किया गया।

सरोजिनी नायडू की मृत्यु पर अनेक लोगों ने उन्हें श्रद्धांजलि दी। भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री जवाहर लाल नेहरू ने संसद में उनके बारे में कहा था।

''श्रीमती सरोजिनी नायडू एक महान राष्ट्रवादी समर्थ अंतर्राष्ट्रवादी थीं। यदि गांधीजी ने राजनीति को नैतिक आधार दिया, तो सरोजिनी ने कलात्मक आधार। उन्होने अपना जीवन कवि के रूप में आरम्भ किया था लेकिन जब वे राजनीति के क्षेत्र में आई तब उनका सम्पूर्ण जीवन ही कविता और संगीत बन गया। अनको प्रतिभा आश्चर्यजनक थी। उनकी पूर्ति असंभव है। उन्होने जिस चीज को भी छुआ, वह अग्निमय हो गई जब उन्होने एशियाई सम्बन्ध सम्मेलन की अध्यक्षता की, तब हम सबको लगा कि वे साक्षात भारत माता है। उनकी वाणी भारत माता की वाणी थी। वे अमीर और गरीब के बीच भेद नहीं करती थीं। उन्होने हमें नही छोडा। वे हमारे दिलों मे बसी हुई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. एस0 गोपाल : ब्रिटिश पालसी इन इण्डिया पृ0 114
2. आशा रानी व्होरा : भारत की अग्रणी महिलायें
3. डा0 दीना नाथ वर्मा : भारत स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास
4. आशा रानी व्होरा : स्त्री सरोकार
5. प्रतियोगिता दर्पण : वर्ष 2000
6. हिन्दुस्तान टाइम्स : मार्च 2013
7. विशेषांक : नायडू की आत्म कथा